प्रथम अध्याय

यशपाल की जीवनी और साहित्य --

मनुष्य का व्यक्तित्व उसके जीवन का अभिन्न पक्ष है। जिनमें किसी एक पक्ष का अध्ययन दूसरे पक्ष के अध्ययन के अभाव में अधूरा-सा रह जाता है। अत: किसी व्यक्ति के जीवन को पूर्ण रूप से समझ लेने तथा समझाने के लिए यह आवश्यक है कि दोनों पक्षों को सूक्ष्मता से जाँचा-परखा जाय। यह बात तो यशपाल जैसे बहुमुखी व्यक्तिवाले व्यक्ति के लिए अनिवार्य ही सिध्द होती है। जीवन एवं व्यक्तित्व का श्रेष्ठत्व दो तरह से देखा गया है। जिन व्यक्तियोंके पीछे समृध्द आनुवंशिक परम्परा एवं परिवेश होता है वे जन्मत: श्रेष्ठ होते हैं। जीवन और व्यक्तित्व की श्रेष्ठता वे विरासत में पाते हैं। लेकिन संसार में ऐसे भी लोग होते हैं जिनकी जिंदगी में अनुवंश एवं परिवेश हाथ न होकर भी वे कतृत्व से श्रेष्ठत्व प्राप्त करते हैं। यशपाल के जीवन एवं व्यक्तित्व की श्रेष्ठता की बुनियाद उनका कर्तृत्व ही है।

जीवन-वृत्त --

यशपाल के पूर्वज कांगडा जिले के निवासी थे। यशपाल के दादा गोठू या गोठूराम भैरज के समीप मराईयाँ-दे टिक्कर के निवासी थे। यह इलाका आजकल हिमाचल प्रदेश का हिस्सा है। गोठूराम के पुत्र हीरालाल गाँव में एक छोटी-सी दूकान चलाते थे। पैतृक सम्पति के रूप में हजार-डेढ हजार गज जमीन का टुकडा और एक कच्चा मकान था। दूकान से गृहस्थी चलने के कोई आसार नजर नहीं आते थे। इन सब स्थिति से उपर उठने के लिए रूपये सूद पर देना आरम्भ किया। भारी सूद पर पैसा देते थे। उनके सूद के व्यवसाय ने उन्हें कोई विशेष धन दिला दिया ऐसी बात नहीं हाँ इससे प्रतिष्ठा और सम्मान जरूर बढा। उन्हें लोग लाल

नाम से पुकारते थे। लाला हीरालाल जी की शादी हम्मीरपुर-जाहु सड़क पर स्थित दिखरैठा जो लम्बलू के समीप है के खानदानी परिवार की लड़की प्रेमादेवी से हुई। वह बड़े परिवार की लड़की थी। प्रेमादेवी के परिवार के पूर्वज शाम चौराशी के राजाओं के राजमंत्री थे। बड़े घर की बेटी होने के कारण वह विलासी थी। इने कम पैसे में उनका विलास नहीं होता था। इसी कारण लाला हीरालाल ने टिकू छोड़ा और वे नादौन के समीप भूम्पल में जा बसे।

यशपाल जी का जन्म १९०३ दिसम्बर पंचनद का पहाड़ी इलाका-कांगड़ा और वहाँ का एक साधनहीन परिवार में हुआ। कई वर्षों के उपरान्त एक और लड़का हुआ जिसका नाम धर्मपाल रखा गया। यशपाल जी की माँ सुविद्य थी। अत: बेटे की पढ़ाई का उन्होंने बचपन से ही खयाल रखा। परिवार की पारंपारिक धारणाने माँ के मन को आर्य समाज के आ के प्रति आकर्षित कर रखा। वह अपने बेटे को आर्यधर्म का ब्रह्मचारी प्रचारक बनाना चाहती हैं। दिनों-दिन होनेवाली पैसे की तंगी के कारण उन्होंने पति का साथ छोड़ दिया और फिरोजपुर (छावनी) में अध्यापिका का काम किया। अत: माँ ने यशपाल को कांगड़ा के गुरुकुल में रखा। घरकी आर्थिक विपन्नता से लड़का अनपढ़ न रहे इसी विचार से वह लड़के की शिक्षा-दिक्षा के प्रति निरंतर सतर्क रहती। यहाँ यशपालजी ने सातवी कक्षा शिक्षा पायी गुरुकुल का सप्तवर्षीय जीवन यशपालजी के व्यक्तित्व निर्माण में और भविष्य को उजागर बनाने में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहाँ के आचार्यों की नीति ब्रह्मचर्य पारंपारिक संस्कार आदि ने यशपाल के मन में इन सब बातों के प्रति घृणा उत्पन्न कर दी। गुरुकुल में कर्मकाण्ड का महत्व रहता था। नंगे पांव या खड़ाऊँ पहन कर चलना काठ के तख्त पर सोना सख्त सर्दी में सूर्योदय से पहले ठंडे पानी से नहाना और भोजन के बाद अपना लोटा-थाली स्वयं मांजना, संध्या पालथी मार आँखे मूंदे, उंचे स्वर से मंत्रोच्चारण जैसी बातों ने उन्हें समाज से अलग-सा बना दिया गया। गुरुकुल में वे नि:शुल्क पढ़ा करते थे। अत: सहपाठी उनकी खिल्ली उड़ाते थे। एक प्रसंग में बताया गया है कि

एक बार यशपालजी बिमार पड़े तो उन्हें खाने के लिए मलाई और मख्खी खाने के लिए दी जाती थी तो सहपाठी उस पर व्यंग कसने लगे तो यशपालजी ने खाना छोड दिया तो भी सहपाठी ने व्यंग्य से कहा कि घरपर खाये तो यहाँ खायेगा। इस प्रसंग के कारण उनके मन में विद्रोह का बीज बोया गया।

एक प्रसंग है जिससे यशपालजी के जीवन में परिवर्तन आया।

" यशपाल चार या पाँच साल के थे उस समय उनके घर के पास एक अँग्रेजी परिवार रहता था। उसकी पत्नीने मुर्गिया पाल रखी थी। यशपाल ने मुर्गियों को छेडना शुरू किया। उस समय उस अँग्रेजी स्त्री ने उसे " गधा और उल्लू " नामक गाली दे दी।" १

यशपालजी ने भी उसे मुँह तोड जबाब दिया। तभी से यशपाल के हृदय में अँग्रेजों के प्रति घृणा का भाव बध्दमूल हो गया।

गुरूकुल मे प्राय: बीमार ही रहा करते थे। सातवी कक्षा तक पहुँचते-पहुँचते प्रबल संग्रहणी रोग से ग्रस्त हुए। देहरादून जाकर चिकित्सा भी करवायी। अन्त में माँ ने उन्हें गुरूकुल से निकाल कर लाहौर के.डी.ए.वी.स्कूल में १९१७ को भर्ती किया। यही उन्होंने " अन्दमान की गूँज "," आनन्द मठ " जैसी किताबे पढी और उनमे से राष्ट्रीयता की चिनगारी प्रज्वलित हुई। १९१९ के आसपास माँ को फिरोजपुर छावनी को प्राईमरी आर्य कन्या पाठशाला में अध्यापिका की नौकरी मिली। यशपाल माँ के साथ लाहौर छोडकर छावनी आ गये और वही के एक सरकारी सिव्हिल स्कुल में पढने लगे। वैसे मौलिक रूप से लिखने की कोशिश उन्होंने गुरूकुल कोगडी में पाँचवी कक्षा में पढते समय की थी।

उस समय हस्तलिखित दैनिक पत्रिका में अंगूठी " शीर्षक से उन्होंने एक कहानी लिखी थी। मिडिल स्कुल की परिक्षा में उत्तीर्ण होने के उपरान्त मनोहरलाल मेमारियल हाईस्कुल में नवी से लेकर मैट्रिक तक पढते रहे। १९२१ के

यहीं से मैट्रिक की परिक्षा में जिले में अव्वल आकर उन्होंने अपनी मेधावी बुध्दि का परिचय दिया ।

१४ वर्ष की आयुमें यशपालने लाहौर में अछूतों के लिए चानी स्कूल में मास्टरजीका काम शुरु किया । १९१९ में रौलेक्ट - बिल के खिलाफ आरम्भ आंदोलन, स्थगित होने के कारण राजनैतिक वातावरण में कुछ शिथिलता आ गई थी । यशपाल इसी समय लाहौर छोडकर फिरोजपुर छावनी में आए थे । और वहाँ के आतंकमय परिवेश से उब-से गये । अत: वहाँ के आर्य समाज मंदिर के सार्वजनिक कार्यों में संलग्न रहे । " भजन उपदेश, प्रचार भाषण आदि कार्यों के साथ समाज की ओर से चलायी जानेवाली रात्री की पाठशाला में बच्चों को पढाने का कार्य करने लगे । इस पाठशाला में प्रधानअध्यापक नियुक्त किए गए । आठ रूपये मासिक वेतन तय हुआ । यशपालजी के जीवन की यह पहली कमाई थी[2] । "

यशपालजी स्कूल में पढने के अतिरिक्त प्राय: सालभर यह नौकरी करता रहा ।

यशपालजी स्वयं घर के काम में भी अपना हिस्सा अदा करते थे । उन्होंने सिंहावलोकन में कहा है --

" माँ खाना बनाकर रख जातीथी और दोनों भाई दस बजे स्कूल में जाते थे । माँ स्कूल से थकी हुई आती थी और वह आकर चौका बरतन करे, यह मुझे अन्याय जँचता था । इसलिये मैं स्कूल जाने से पहले चौका-बरतन करता था ।"[3]

इस प्रसंग से यह दिखाई देता है कि गुरुकुल में स्वयं का लोटा और थाली स्वयं मांजने का नियम उन्होंने घरमें भी शुरु किया होगा ।

१९२१ में असहयोग आंदोलन ' की धूम सारे देश में फैली थी । वह जमाना था जब बच्चे बुढों में अंग्रेजों के प्रति नफरत पैदा हो चुकी थी । यशपाल इस वातावरण से अछूत कैसे रह जाते ? उन्होंने मैट्रिक पढाई के साथ अपनी राजनैतिक पढाई शुरु की थी । आन्दोलन के प्रचार कार्य के लिए देहातों में जाने

लगे । कॅांग्रेस के हर कार्य में सहयोग देते रहे । देश स्वतंत्र करने की जिदने उन्हें पागल बना दिया ।

यशपालजी ने कॅालेज में प्रवेश नहीं लिया । इस कारण माता बहुत हताश हो गयी थी । शिक्षा ही बेटे का सम्बल है इस विचार से माता यशपालजी को बार-बार मनाती रही पर बेटे यशपाल ने नहीं माना । माँ की एक शर्त पर स्वीकार किया की वे किसी सरकारी कॅालेज में दाखिल नहीं होंगे ।

१९२२ में कॅालेज खुलनेपर वे नेशनल कॅालेज में दाखिल हुए । नेशनल कॅालेज की शिक्षा वैसे व्यावसायिक रूप से फलदायी न थी, न व्यावहारिक रूप से । सरकारी कॅालेज में जाते तो उनकी शिक्षा अच्छी तरह से पुरी होती । यहीं यशपालजी की भैंट मशहुर क्रांतिकारी भगतसिंह तथा सुखदेव से हो गयी । अध्यापकों की प्रेरणा डैनवीन, मैजिनी, गैरीबाल्डी, वाल्जेयर तथा रूसों जैसे लेखकों के ग्रंथों में प्रस्तुत विचार गांधीजी के विचारों से प्रभावकारी सिध्द हुए । इसी समय यशपालजी ने भगतसिंह के सामने देश के समर्पण के लिए अपना जीवन बिता देने की प्रतिज्ञा की । उन दिनों में उनके क्रांति के पथ-प्रदर्शक के रूप में प्रो. जयचन्दजी विद्यालंकार और साहित्य के रूप में उदयशंकर भट्ट रहे थे । उदयशंकर भट्ट की शिफारिस पर ही यशपाल की प्रथम कहानी ` मक्रील ` बरेली की भ्रमर पत्रिका में प्रकाशित हुई । इस प्रकाशन से वे उत्साहित हुए और ` प्रताप ` , ` प्रभा ` के लिए कोई न कोई रचना भेजते रहे । उनके तत्कालीन लेखन की सफलता उनके इस कथन में निहित है ---

" मेरे छोटे-छोटे लेख या गद्य-काव्य ` प्रताप ` या ` प्रभा ` से कभी लौटाये नहीं गये । " [४]

सन १९२६ में यशपाल, सुखदेव, भगतसिंह , भगवतीचरण, इंद्रपाल आदि क्रियात्मक कदम उठाने के लिए लालायित थे पर साधनों की कमी से हारकर बैठ जाने के सिवा दूसरा मार्ग नहीं था । इसी समय ` हिन्दुस्थान रिपब्लिकन आर्मी ` नामसे एक संगठन कार्यरत था । जिसने लखनऊ जिले के ` काकोरी ` में रेल्वे का सरकारी

खजाना लूटा था। परिणाम स्वरूप व्यापक गिरफ्तारी का दौरा चला जिससे इन लोगों का कदम उठाने में बाधा पड़ गयी। इसी समय पढाई की ओर ध्यान कम ही रहा। सुखदेव, भगतसिंह कॉलेज में ज्यादा नहीं जाते। यशपाल की मजबूरी ने उन्हें पढाई में संलग्न रखा। इसी समय उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय की 'प्रभाकर' परीक्षा दी। पर यशपाल अन्दर-ही-अन्दर अपने आपको बेचैन अनुभव कर रहे थे।

यशपाल के पिता की मृत्यु के बाद यशपालजी की माँ बड़े धीरज के साथ अपने दोनों लड़को बेटें को पढाने के लिए व्रत संकल्प थी। फिरोजपूर के अनाथालय से नौकरी छोड़ने के उपरान्त छोटें बच्चे धर्मपाल की शिक्षा का जिक्र रख माता प्रेमादेवी ने कांगड़ा जाने की अपेक्षा लायलपुर में अपना डेरा जमाया। यशपाल की नौकरी छूटने के कारण वे भी लायलपूर में आ गये लेकिन उन्हें वहाँ रहना अच्छा नहीं लगा इसी कारण वह फिर वापस लाहौर लौट आये।

१९२७ में यशपालजी बेकारी से त्रस्त होकर 'हिन्दुसंगठन' में कार्य करते रहे। हिन्दु व्यायामशाला में एकत्रित करके गत का पुरी बाना लाठी और सैनिक व्यायाम सिखाने का काम उनपर सौंप गया था।

हिन्दुस्थानी समाजवादी प्रजातंत्र सेना -- में क्रांति कार्य --

९ सितम्बर १९२८ में अपने साथीयों के साथ चर्चा करके अपने दल का नामकरण किया 'हिन्दुस्थान सोशालिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' (हिन्दुस्थानी समाजवादी प्रजातंत्र सेना) इस सेना का बोध वाक्य 'मनुष्य के द्वारा मनुष्य के शोषण का अन्त' था। १९३१ में सेना का घोषणापत्र जारी किया। जो यशपाल के नाम से निकाला था। आरम्भ में यशपाल इस कार्य में उतने संलग्न नहीं रह सके। की भगतसिंह, राजगुरू पकड़े जाने के पूर्व तक इनकी गिरफ्तारी के बाद यशपाल 'कमाण्डर इन चीफ' बन गये।

सॉंडर्स वध --

१९२८ में भारत में सायमन कमिशन आया। बार-बार तंग करने पर भी कमिशन में कॉंग्रेस का प्रतिनिधि न लेने पर कॉंग्रेस ने साइमन लौट जाओ का नारा लगाया। हड़ताल एवं प्रदर्शन का आयोजन किया गया। इस व्यापक हड़ताल का जिक्र करते हुए यशपाल लिखते है --

" लाहौर में साइमन कमिशन के बहिष्कार से प्रदर्शन का आयोजन वास्तव में नौजवान ही कर रही थी। सब ओर मुकम्मिल हड़ताल,काले झाण्डे और शोक में नंगे सिरों की बाढ-सी नजर आती।" ५

इस प्रदर्शन का नेतृत्व लाला लजपतराय ने किया इसी समय लाला लजपतराय पर डी.एस.पी.सॉंडर्स ने बुरी तरह से लाठी चलाई जिससे उनका १७ नवम्बर १९२७ में देहांत हो गया।

इस कृत्य से सभी क्रांतिकारी चिढ़ उठे। उन्होंने सॉंडर्स की हत्या करने का निश्चय किया। इसका कार्यक्रम निश्चित किया गया। इस कार्य के प्रमुख भगतसिंह और राजगुरु थे। सॉंडर्स पर गोली चलाकर भागकर डी.ए.वी.कालेज का हाता पार करके बोर्डिंग के भीतर चले जाने का मार्ग निश्चित किया था।

नियोजित योजना के अनुसार कार्यसिध्दि हो जाने पर फरार क्रांतिकारियों के लिए पैसे इकठ्ठा करने की जिम्मेदारी यशपाल पर थी उन्होंने अपना कार्य निष्ठा-पूर्वक निभाया। यशपाल ने अपने अभिभावक डॉ.गोपीचन्द से पैसे प्राप्त किए और भारत के प्रेमियों को सुरक्षित जीवन बिताने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

लाहौर बम फैक्टरी --

सॉंडर्स-वध के बाद इन सभी क्रांतिकारियोंने बम विस्फोट तथा लाहौर में बम बनाने की फैक्टरी शुरु करने का कार्य शुरु किया। इस कार्य में यशपाल मुख्य रूप से कार्य करते थे। सुराग लगनेपर पुलिसने फैक्टरी पर छापा डाला किन्तु

यशपाल फरार हो गये । लाहौर की बम फैक्टरी पकडी जाने पर सुखदेव गिरफ्तार हो गये । यशपाल कश्मीर जाकर केमिस्ट्री के लेक्चरर देवदत्त से बम बनाने की विद्या पैदा कि । लेखाराम वैद्य के यहाँ उन्होंने फैक्टरी शुरु कि । इस बम बनाने के कार्य में यशपाल के स्वास्थ में बहुत फर्क पड गया । उस रासायनिक क्रिया में उबलते हुए तेजाब से पीली रंग का धुआँ अधिक मात्रा में निकलता था, जो स्वास्थ के लिए हानिकारक था । शरीर का रंग हल्दी जैसा पीला हो गया । धुएँ की वजहसे तेज खाँसी और सिर-दर्द रहने लगा ।

वाइसराय की स्पेशल ट्रेन के नीचे बम विस्फोट --

यशपाल के साथियोंने तय किया कि वाईसराय की गाडी उडायी जाय २४ अक्तुबर, १९२९ को वाइसराय का बम्बई से दिल्ली लौटने का कार्यक्रम तय हुआ था । उसी समय बम विस्फोट करना था । लेकिन वाइसराय दिल्ली जाकर कोई सुधार करनेवाले थे इस आशा से उनके साथियोंने पहला बम विस्फोट करने से इन्कार किया । ...ी नाराज हो गये । फिर दूबारा योजना बनाई गयी । २३ दिसंबर १९२९ को वाइसराय कोल्हापुर से दिल्ली जानेवाले थे । रेल सुबह छ बजे दिल्ली पहुँचनेवाली थी । गाडी निश्चित समयपर आ गयी । यशपालने बटन दबाया, विस्फोट हो गया । धुआँ निकल गया लेकिन वाइसराय बाल-बाल बच गये । वाइसराय के डिब्बे के पिछे के डिब्बे के निचे स्फोट हो गया । यशपाल ने वेशांतर किया था । फौजी अफसर का वेश धारण किया था इसी कारण पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार करने के बजाय सेल्यूट किया । इस घटना से उनकी पार्टी में नाराजी फैला गयी किन्तु यशपालजी ने अपने पार्टी के लोगों को समझाया कि दल ने हमारा कार्यक्रम दो बार स्थगित किया था इसी कारण लोग हमें बुजदिल समझने लगे थे इसी लिए हमने रेल पिटरी के निचे बम स्फोट किया है ।

गिरफ्तारी --

वाइसराय की गाडी के निचे बम विस्फोट के बाद यशपाल फरार रहे, किन्तु वे फरार रह कर भी गुप्त बम तैयार करते थे । इनके दल के कोई लोग पुलिस

के दलाल बन गये और उन लोगों ने यशपालजीका पता बता दिया और उन्हें गिरफ्तार किया गया । यशपालजी को पकडने के हेतु तीन हजार रुपये का इनाम भी लगाया गया था ।

जेल-जीवन में ऐतिहासिक विवाह --

यशपालजी के क्रांतिकारी जीवन में प्रकाशवती ' नाम की क्रांतिकारी साथी का परिचय हुआ था । प्रकाशवतीजी का परिवार परंपरावादी था । फिर भी उन्होंने अपना क्रांतिकारी मार्ग अपना लिया था । इतना ही नहीं तो वह अपने कार्य के लिए घर छोडने के लिए तैयार थी । अपने माता-पिता को छोडकर वह क्रांतिमें शामिल होना चाहती है । गिरफ्तारी के बाद वह जेल में जाकर अपनी निष्ठा का पुन: परिचय कर देती है । इस घटना से यशपालजी हैरान हो जाते है । यशपालजी प्रकाशवतीसे भूलने के लिए कहते है लेकिन वह मानने के लिए तैयार नहीं हैं । यशपालजी ने एक पत्र लिखकर उन्हें वास्तविकता के बारे में बताया है,

" जीवन को व्यावहारिक और वास्तविक दृष्टिकोण से ही देखना चाहिए । व्यक्ति का मूल्य उससे समाज या दूसरे व्यक्तियों को प्राप्त होनेवाले संतोष और उपयोग से ही होता है । जिस व्यक्ति की उपस्थिति या स्मृति केवल अभाव या निरन्तर दु:ख का कारण बने,तो उससे मुक्ति पा लेना ही अपने प्रति न्याय है । जो दांत सदा पीडा ही दे, उसे निकालकर दूसरा दांत लगवा लेना ही न्याय और कर्तव्य है ।" [६]

इतना बतानेपर भी प्रकाशवती नहीं मान गयी । उन्होंने बरेली के डिस्ट्रिक मैजिस्ट्रेट की अदालत में अर्जि दी कि कैदी यशपाल से शादी करेगी । मैजिस्ट्रेट उलझन में पड गये । जेल में शादी यह इतिहास में पहला ही प्रसंग था । जेल में शादी की जाय या ना की जाय इसके बारे में कोई कानुन न होने के कारण उसे अनुमति दे गयी । यशपालजी और प्रकाशवती की शादी ७ अगस्त १९३६ को ' बरेली जेल ' में संपन्न हुई । यह शादी जेल में संपन्न हो गयी यह वार्ता सुनकर मेजर मल्होत्राने यशपालजी और प्रकाशवती के बारे में एक उद्गार निकाला --

" इस लड़की का त्याग देखो । त्याग और धर्म की ऐसी भावना हिंदु नारी के अतिरिक्त संसार में कही सम्भव नहीं है । मैं मानता हुँ कि तुम भी असाधारण देशभक्त और वीर आदमी हो । तुमने अपना जीवन देश के लिए बलिदान किया है -- पर मैं सोचता हुँ इस लड़की को तुमसे शादी करने से मिलेगा क्या ? उसका तो यह असाधारण त्याग आदर्श है ।" [७]

उपाधियाँ तथा सम्मान --

यशपाल के साहित्यिक व्यक्तित्व को यदि देखा जाय तो उन्हें देश-विदेशी सम्मानोंसे पुरस्कारीत किया गया है । जैसे --

देव पुरस्कार --

विन्ध्य प्रदेश शासन की ओर से वर्ष १९५४-५५ के सर्वश्रेष्ठ रचनात्मक गद्य विषय पर दिया जानेवाला ' देव-पुरस्कार ' विजेते यशपालजी । इस पुरस्कार की धनराशि इक्कीससौ रूपये थी । इस पुरस्कार के साथ एक ताम्रपत्र भी प्रतिक रूपमें दिया गया । यह पुरस्कार मार्च १९५५ में श्री कस्तुरी सन्तानम्, उपराज्यपाल, विध्यप्रदेश के हाथों प्रदान किया गया ।

सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार --

भारत तथा सोवियत देश के बीच शान्ति और मित्रता का विशेष कार्य करने के उपलक्ष्य में पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र १४ नवंबर, १९६३ को दिल्ली में तत्कालीन उपराष्ट्रपति गोपालस्वरूप के हाथ से दे दिया । इस पुरस्कारके रूपमें आठ हजार रूपये की धनराशि के साथ सोवियत-यात्रा का सुअवसर भी यशपालजी को दिया गया ।

मंगलाप्रसाद पुरस्कार --

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की ओर से २०२२ का ' मंगलाप्रसाद ' पारितोषक बारह सौ रूपये की धनराशि और ताम्रपत्र के रूप में उनकी रचना ' झुठा-सच ' के लिए प्रयाग में माघ ११, शाक सं.१८८९ को प्रदान किया गया ।

यह पुरस्कार कमलापति त्रिपाठी के कर कमलों से अर्पित किया गया ।

साहित्य अकादमी पुरस्कार --

१९७६ के लिए चुनी गई सर्वश्रेष्ठ रचना के रूप में यह पुरस्कार यशपालजी के अंतिम उपन्यास' मेरी तेरी उसकी बात' के लिए प्रदान किया गया । पुरस्कार के रूप में साहित्य अकादमी द्वारा दिया जानेवाला ताम्रपत्र तथा पाँच हजार रूपये की धनराशि दे दी गयी ।

उपाधियाँ --

साहित्यवारिधि --

सन १९६७ में ' उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन' प्रयाग की ओर से यह उपाधि श्री यशपाल को हिन्दी वाङ्.मयं को अपने कृतित्व से समृध्द करने के उपलक्ष्य में प्रदान की गयी ।

पद्मभूषण --

भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वराहगिरिव्यंकटगिरि ने व्यक्तिगत गुणों के सम्मानार्थ यह उपाधि २१ अप्रैल १९७० को प्रदान की गयी ।

डी.लीट.

आगरा विश्वविद्यालय ने साहित्य सेवा के सम्मानार्थ यह उपाधि सन १९७४ में प्रदान की गई । यह उपाधि उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल अक्बर अली खाँ के हाथों से प्रदान की गई ।

साहित्य वाचस्पति --

हिन्दी साहित्य सम्मेलन,प्रयाग की ओर से अमूल्य हिन्दी सेवा के उपलक्ष्य के रूपमें यह उपाधि और प्रमाण के रूप में ताम्रपत्र' सहर्ष प्रदान किया गया । यह समारोह राष्ट्रीय सायन आग्रहायण १६,शके १९१७ अर्थात ७ दिसम्बर १९७५ को सम्पन्न हुआ ।

ताम्रपत्र --

काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा -- डॉ.श्यामसुन्दर दास जन्मशती समारोह के अवसर पर हिन्दी भाषा और साहित्य की सेवा के लिए १९ मई १९७५ को काशी नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से सादर समर्पित किया गया ।

भारत वर्ष की ओर से --

भारत वर्ष के स्वतंत्रता के पचीसवें वर्ष के अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम में स्मरणीय योगदान के लिए राष्ट्र की ओर से तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने १४ अगस्त १९७२ को ताम्रपत्र भेंट किया ।

सम्मान-पत्र --

भारत साहित्य संघ, त्रिओले --

भारत साहित्य संघ,त्रिओले (मॉरिशस) के त्रैमासिक प्रकाशन 'आभा' की ओर से मॉरिशस में ऐतिहासिक शुभागमन पर रविवार दिनांक ८ जनवरी १९७३ को प्रदान किया ।

साहित्य संसद ,पंजाब --

१० दिसम्बर,१९६३ को साहित्य संसद की ओर से 'षष्ठिपूर्ति' के उपलक्ष्य में पटियाला में प्रदान किया गया ।

उत्तरप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन,इलाहाबाद --

दीर्घकालीन उत्कृष्ठ कथा साहित्य की सेवा और हिन्दी के प्रबल समर्थन लिए २३ नवम्बर १९६४ को मेरठ में उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा की अध्यक्षता में प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के करकमलों से प्रदान किया गया ।

साहित्यकार परिषद,पेप्सू,पटियाला --

कला-कृतियों की उत्कृष्टता के स्वीकारार्थ ३० मार्च,१९५६ को प्रदान किया गया ।

यशपाल अभिनन्दन समिति, दिल्ली --

प्रस्तुत समिति तथा दिल्ली निवासी साहित्यिकों की ओर से षष्ठिपूर्ति के अवसर पर ७ दिसम्बर, १९६३ को प्रदान किया गया ।

अभिनन्दन ग्रंथ --

पंजाबी, विभाग पेप्सू, पटियाला की ओर से ३० मार्च, १९५६ को वार्षिक दरबार के अवसर पर हिन्दी की सेवा के उपलक्ष्य में प्रदान किया गया ।

जीवनान्त --

यशपालजी के इतने मान, सम्मान, मिले उनका जीवन संतोषपूर्ण रहा था । इनकी सभी इच्छाएँ और आकांक्षाएं पूर्ण हो गयी थी किन्तु एक काम अधूरा रह गया था, वह सिंहावलोकन का चतुर्थ खण्ड लिख रहे थे उसी समय उनका शरीर साथ नहीं दे रहा था । सिंहावलोकन का चतुर्थ खण्ड लिखना नियति को मंजुर नहीं था । ७३ वर्षों की उम्र में भी जीवन में प्यार और संघर्ष की अदभूत शक्ति थी । लिखने के लिए घण्टो बैठना उनके बसकी बात नहीं थी । दिनों-दिन स्वास्थ बिघडताही गया । अंतिम दिनों के अन्तिम पल्नों में भी वे अपने परिवार के बारे में या बगिचे के बारेमें अपनी पुत्रवधु मिनाजी को बार-बार पुछते थे । मिनाजी ने दुध पिलाया, ग्लूकोजका इंजेक्शन देना था तो उसने नहीं लिया और कुछ पल्नोंमेंही उन्होंने जिन्दगी से मुँह फेर लिया । यह दिन था २६ दिसम्बर १९७६ । समय दोपहर दो बजे थे । दूसरे दिन सुबह अंत्येष्ठि में साहित्यिक, पत्रकार, राजनितिक आदि के साथ जनसाधारण भी उपस्थित थे । चिता जलाने के पहले पुलिस टुकडी ने शस्त्र उल्ट दिए ।

यशपालजी ने जो साहित्य लिखा वह सप्रयोजन लिखा है, उनका साहित्य समाज के लिए लिखा गया साहित्य है । समाज के मनोरंजनके लिए और स्वतंत्रता संग्राम के लिए उपदेश के रूप में उन्होंने साहित्य लिखा ।

व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू --

१) क्रांतिकारी --

यशपालजीके बचपन का प्रसंग बहुत हृदयद्रावक है, कांगडा में उनके पास एक अंग्रेजी अफसर रहता था उनकी पत्निने मुर्गियाँ पाल रखी थी तो यशपालजी उन्हें छेडते थे इसीकारण वह अंग्रेजी स्त्री यशपालजी को मुँहतोड जवाब देते हैं। इतनी छोटी उम्र में भी अंग्रेजी के प्रति घृणा का भाव है।

सैंडर्स वध, बैन्क की डकैती, विधान सभा बम कांड, लाहौर बम फैक्टरी जैसी क्रांतिकारियों में यशपाल ने अपने साहस और चातुर्य का परिचय दिया है। उन्होंने हिं.स.प्र.सेना स्थापन की और भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरू तथा भूपेंद्रनाथ, गिरफ्तारी एवं चंद्रशेखर आजाद भूमिगत बन जानेपर भी उन्होंने हिं.स.प्र.से.को जारी रखा।

२) साहित्यिक --

यह शक पैदा होता है कि यशपालजी पहले क्रांतिकारी या पहले साहित्यिक। यशपालजी पहले साहित्यिक थे। यशपालजी जब गुरूकुल कांगडा में शिक्षा के लिए थे उसी समय वे लिखने आये हैं। नेशनल कॉलेज में पढते समय भी उन्होंने अपना लिखना जारी रखा था। यशपाल लेखक के रूप में १९३६ में 'पिंजरे की उडान' इस कहानी संग्रह से प्रसिध्द हुए।

सन १९३६ से १९७६ की लम्बी अवधी में यशपालजी ने उपन्यास, कहानी, नाटक, आत्मकथा, निबंध, यात्रा विवरण इन गद्य विधाओंका लेखन किया। यशपाल ने क्रांतिकारी जीवन के साथ साहित्यिक जीवन में भी अपनी समाजवादी विचारधारा को स्पष्ट किया है। अपने साहित्य के द्वारा यशपालने मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का विरोध किया है। यशपालने अपना साहित्य सहेतुक निर्माण किया है।

मार्क्सवादी दर्शन यशपाल की जीवन-दृष्टिका महत्वपूर्ण अंग है। उन्होंने

मार्क्सवाद के आर्थिक पक्षकाही नहीं उसके राजनीतिक तथा सामाजिक दृष्टिकोण को भी अपनाया है। इसलिए उन्होंने एक ओर पूँजीवादी व्यवस्था की कटू आलोचना की है तो दूसरी ओर उत्पीड़ित वर्ग को क्रांति के लिए आवाह्न दिया है।

प्रत्येक व्यक्ति को अपने परिश्रम का फल पाने का समान अवसर होना चाहिए उसे समाज के शासन और व्यवस्था में भाग लेकर आत्मनिर्णय का भी समान अधिकार हो।

यशपालने समाजवाद के इसी आदर्श को 'दादा कामरेड' और 'देशद्रोही' में यथास्थान व्यक्त किया है और मजदूरों का संगठन तथा मजदूर क्रांति पर जोर दिया।

साहित्य --

यशपाल बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार हैं। उनके साहित्यिक कृतित्व के अगण्ति उपन्यास,कहानियाँ,यात्रा-वर्णन,नाटक,साहित्यकार एवं राजनीतिक निबंध तो आते ही हैं,उन्होंने देश की मुक्ति के लिए अशस्त्र क्रांति के आंदोलन की कहानी भी 'सिंहावलोकन' नाम से आप-बीती रूप में लिखी है। इस प्रकार उनका कृतित्व महान माना जाता है। यशपाल जी को अनेक सम्मान मिले है जैसे -- मध्यप्रदेश,उत्तरप्रदेश एवं पंजाब सरकारने उन्हें कई बार पुरस्कृत किया है। हालही में साहित्य अकादमी ने उन्हें उनकी पुस्तक 'मेरी तेरी उसकी बात' पर अकादमी पुरस्कार दिया है।

यशपाल देश में भी नहीं विदेश में भी सम्मान प्राप्त लेखक हैं। उनकी अनेक रचनाओं का देशी तथा विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। उनकी कहानियाँ रूसी,अंग्रेजी,फ्रेन्च तथा चेक भाषाओं में अनुदित हो चुकी है। मलयालम, मराठी,गुजराथी,तमिल और तेलगु भाषाओं में भी अनुवाद हो चुका है। 'झूठा - सच' रूसी भाषा में अनुदित हो चुका है।

झुठा-सच को 'सोशलिस्ट-रियलिज्म ' का जीवन्त उदाहरण भी कहा है। इस प्रकार उनका यश भारत की सिमाओं को लाँधकर विदेशों में भी पहुँच गया है।

यशपाल ने हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा दी। यद्यपि कहीं - कहीं गांधीवादी आदर्शों की कटू आलोचना और मार्क्सवादी सिध्दान्तों का विश्लेषण आखरता है तथापि हिन्दी उपन्यास के विद्रोह,क्रांतिकारी स्वर देने का श्रेय यशपाल का ही है। यशपाल के साहित्य की मनोवैज्ञानिक पीठिका पेट और रोटी के प्रश्नपर आधारित हैं। वह व्यभिचार के लिए भी आर्थिक व्यवस्था के उत्तरदायि मानते है। यशपालने जो कुछ साहित्य लिखा है वह जीवन के अनुभूत तथ्यों निराशा और असफलताओं का प्रतिफल है। उनकी रचनाओं में व्यापक एवं सुक्ष्म समस्याओंका चित्रण सामाजिक शोषण और उत्पीडन का हृदयद्रावक दर्द और चिन्तक जन्य गंभीरता मिलती है। उन्होंने अपनी कृति द्वारा आदर्श की आशा नहीं की किन्तु क्रान्ति की मशाल जलायी है। जन साधारण के लिए हिन्दी कथा साहित्य का प्रतिनिधित्व करनेवाले वह प्रेमचन्द के बाद अकेले कथाकार हैं। शांतिप्रिय द्विवेदी ने यशपाल के बारे में कहा है --

" भाषा और शैली की दृष्टिसे.... प्रेमचन्द ही नये युग में नया शरीर धारण कर पूनः सजीव हो उठे हैं। यशपाल .... प्रेमचन्द की निरोहित प्रतिभा की तरूण शक्ति है। "[१०]

डॉ.नगेन्द्र का कथन है समाज के वैषम्य पर प्रहार करते समय यशपाल का प्रखर व्यंग्य अभिव्यक्ति का मेरूदण्ड बन जाता है। धर्म और नीति के रूढिग्रस्त जर्जर खण्डहरों के धाराशायी कर समाजवादी अर्थ व्यवस्था की नींव पर नव-निर्माण का आग्रह यशपाल की लेखन कला का अंग बन गया है।

यशपाल के उपन्यासों का विभाजन वर्ण्य-विषय के आधारपर अनेक वर्गों में किया जाता है, जैसे सामाजिक,राजनीतिक,ऐतिहासिक,मनोवैज्ञानिक आँचलिक

आदि । उपन्यासोंका वर्गिकरण करना बहुत कठिन काम है। जिस उपन्यास में जिस स्वर की प्रधानता है उसी के आधारपर उसे राजनीतिक,सामाजिक,ऐतिहासिक कहा जा सकता है। यशपाल के अधिकांश उपन्यासों में सामाजिक उपन्यासोंका चित्रण होते हुये भी राजनीति का स्वर प्रधान है। उनके देश की राजनीतिक समस्याओं,नीतिओं,आन्दोलनों और विचारों को स्पष्ट अभिव्यक्ति मिली है। कथानक राजनीतिक घटनाओं से सम्बधित है,तो पात्र राजनीति में सक्रिय भाग लेनेवाले और विशिष्ठ राजनीतिक मत के माननेवाले प्रमुख और स्त्री है। उनका उद्देश्य भी किसी राजनीतिक सिध्दान्त का प्रचार एवं प्रसार करना है ; अत: उन्हें राजनीतिक उपन्यासही कहा जाएगा। यशपालजी के उपन्यासों का वर्गीकरण निम्न प्रकारसे किया जाता है।

१) राजनीतिक उपन्यास।

२) ऐतिहासिक उपन्यास।

३) सामाजिक उपत्यास।

राजनीतिक उपन्यास --

१) दादा कामरेड --

में प्रकाशित इस घटना-प्रधान राजनीतिक उपन्यास का सम्बन्ध देश की १९३० के आस-पास की राजनीतिक गतिविधी और घटनाओं से है।

२) देशद्रोही --

१९४३ में प्रकाशित यशपाल जी का दूसरा उपन्यास है। १९४२ कॉंग्रेसी आंदोलन और कम्युनिस्ट पार्टी की युध्द समर्थक नीति को प्रस्तुत करने के उद्देश्य से लिखा गया यह उपन्यास है।

३) पार्टी कामरेड --

` पार्टी कामरेड ` विशुध्द राजनीतिक संघर्ष को लेकर साकार हुआ है। इस उपन्यास का प्रकाशन १९४६ में हुआ है। यह लघु राजनीतिक उपन्यास है।

सन १९४२ से लेकर १९४६ तक के राजनीतिक संघर्ष को चित्रित करना लेखका लक्ष्य है।

४) <u>मनुष्य के रूप</u> --

फरवरी १९४९ में लिखित राजनीतिक और रोमांस से मिश्रित कथा ओज को प्रस्तुत करने का यह शायद यह चौथा प्रयास है।

५) <u>झूठा सच</u> --

१९५८-१९६० ई. की अवधी में लिखा गया यह उपन्यास है। भारतीय जीवन की व्यापक और सत्य जीवन की झाँकी प्रस्तुत करता है। उपन्यास की पहली किस्त सन १९५८ में वतन और देश नाम से प्रकाशित हुई। सन १९४२ से १९५५ तक की राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधीयों का मानो पूरा उपन्यास एक चलचित्र है।

<u>ऐतिहासिक</u> --

१) <u>दिव्या</u> --

बौध्द कालीन समाज के चित्र खींचते हुए यशपाल ने परतंत्र स्थिति की कथा का आधार बनाया है। इस उपन्यास का प्रकाशन काल १९४५ है।

२) <u>अमिता</u> -

अमिता उपन्यास का आधार सम्राट अशोक कलिंग विजय। इस उपन्यास में कल्पना अधिक है। ऐतिहासिक आधार कम है। इस उपन्यास की रचना १९५६ में हुई लेकिन प्रकाशन १९६० में हुआ।

<u>सामाजिक</u> --

१) <u>बारह घण्टे</u> --

लघु सामाजिक उपन्यास है। कुछ लोगों ने इसे तर्क-प्रधान, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक उपन्यास भी कहा है। इस उपन्यास के कथा का आधार ईसाई जीवन और

तर्क के लिए ` सावित्री-सत्यवान ` की पुरातन कथा का आश्रय लिया जाता है।

२) अप्सरा का शाप --

इस उपन्यास का कथाबीज महाभारत में वर्णित ` शाकुन्तलोपाख्यान ` है। लेखक ने पातिव्रत-धर्म के आदर्श को अपने युग की भावना तथा दृष्टि से देखने का प्रयास किया है।

३) क्यों फँसे --

यौन स्वेच्छाचार ` की पाश्चात्य मान्यता को भारत जैसी संस्कृति-रक्षक भूमि पर वैचारिक रूप से लाने का लेखक का प्रयास आधुनिक माना जाता है। पारम्परिक यौन सम्बधों की मान्यताओं से नर-नारी की मूक्ति के उद्देश्य से लिखा यह उपन्यास यौन स्वेच्छाचार की हिमायत करता मानवता को पशुता की श्रेणी में लाकर रख देता है।

४) मेरी तेरी उसकी बात --

` मेरी तेरी उसकी बात ` चालीस वर्षों का इस काल की लम्बी परिधी में लेखकने ऐसी तीन पीढियों को चित्रित किया है जो विगत, आगत तथा अनागत के त्रिकाल की अटूट सामाजिक शृंखला का निर्माण करने में सफल हुई है।

समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करने में यशपाल सदा सफल रहे हैं। ` झूठा-सच ` में तो हमें इसका प्रमाण मिलता ही है, प्रस्तुत उपन्यास में भी मुस्लिम समाज की झाँकी तथा धर्म परिवर्तन कर ईसाई बने परिवारों की मानसिकता का चित्र बड़ा प्रत्ययकारी है। कुल मिलाकर ` मेरी तेरी उसकी बात ` में यशपाल ने अपने को दुहराया मात्र है। विषय और शिल्प की दृष्टि से उसमें कुछ नया पाने की आशा करनेवाले पाठकों को निराशा ही मिलेगी।

कहानी --

प्रेमचंद के बाद यशपाल ने भारतीय समाज जीवन का यथार्थ चित्र खींचकर अनगिनत समस्याओं, रूढियों, अन्यायों से समाज को मुक्त करने की कोशिश की है। यशपाल जी ने कुल १६ संग्रहोंमें १०० कहानियाँ प्रकाशित की हैं। समय-समय पर प्रकाशित और असंग्रहित कहानियों को मिलाकर वे २२५ से अधिक होती हैं।

कहानी संग्रह --

१) पिंजरे की उडान (१९३९)।
२) वो दुनिया (१९४१)।
३) तर्क का तुफान (१९४३)।
४) ज्ञानदान (१९४३)।
५) अभिशाप्त (१९४४)।
६) भस्मावृत्त चिनगारी(१९४६)।
७) फूलों का कुरता (१९४६)।
८) धर्मयुध्द (१९५०)।
९) उत्तराधिकारी (१९५१)।
१०) चित्र का शीर्षक(१९५२)।
११) तुमने क्यों कहा मैं सुंदर हूँ। (१९५४)।
१२) उत्तम की माँ (१९५५)।
१३) ओ भैरवी (१९५८)।
१४) सच बोलने की भूल(१९६२)।
१५) खच्चर और आदमी(१९६५)।
१६) भूख के तीन दिन (१९६८)।

संग्रह में यशपाल की तथा परम्परा में सबसे दिर्घ भूख के तीन दिन ` तथा सबसे संक्षिप्त ` सीख ` कथा संग्रहीत हैं। जो संग्रह की विशेषता ही समझी जाएगी। संग्रह की कहानियाँ पढने के आदि पाठकों को ये कहानियाँ यशपाल की

ही हैं इस पर सन्देह हो सकता हैं। इसका कारण ये कहानियाँ यशपाल की बनी-बनायी प्रतिमा को भंग करती हुई एक नई शक्ल-सूरत का परिचय देती हैं।

निबन्ध --

भाषा की व्यंजना शक्ति में वृध्दि होनेपर ही निबंध जैसी प्रौढ रचना संभव होती है। तभी तो संस्कृत में कहा गया है --

" गद्य कवींना निकर्ष वदंति।" ११

किसी भी रचनाकार द्वारा निबंध की रचना करना अपनी विचारधन एवं भाषागत प्रौढता को सिध्द करना हैं। यशपालजी ने निबंध साहित्य में भी अपना हिस्सा उठा लिया हैं। निबंधोंका वर्गीकरण इस प्रकार किया जाता हैं।

१) राजनीतिक निबंध --

१) गांधीवाद।

२) मार्क्सवाद।

३) रामराज्य।

४) स्वातंत्र्य ।

५) क्रांति।

६) जेल।

७) सत्याग्रह।

८) हडताल ।

२) हास्य निबंध --

१) चक्कर क्लब।

२) बात-बात में बात।

३) कथात्मक निबंध --

१) देखा, सोचा, समझा।

२) बीबीजी कहती है - मेरा चेहरा रोबीला हैं।

३) जग का मुजरा।

यह विवक्षित बात है कि यशपाल का समूचा निबंध साहित्य भारतीय समाज के राजनीतिक,सामाजिक,आर्थिक एवं साहित्य कला विषयक प्रश्नों से जुड़ा हुआ है। यह इन निबंधों की विशेषता रही है। यशपालने सभी निबंधों में भारतीय प्रश्नों पर विचार दिया है।

नाटक --

किसी भी नाटककारको सफल तब तक नहीं कहा जाता जब तक उसके नाटक रंगमंच और अभिनेयता की कसौटीपर खरे नहीं उतरते है। इस दृष्टि से यशपाल को सफल नाटककार कहने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। उन्होंने अपने नाटकों को रंगमंच पर लाकर इस कसौटी पर उतारा है। यशपाल ने इने-गिने ही एकांकी लिखे हैं,जो नशे-नशे की बात में

संग्रहीत है वे निम्ननुसार हैं --

१) नशे-नशे की बात।

२) रूप की परख।

३) गुडबाय दर्द-दिल।

यशपाल के नाटकों के विचार प्रगतिशिल हैं। वातावरण निर्माण में अदभूत सफलता भी उनकी लेखनी का चमत्कार है। डॉ.देवपाल खन्ना का कथन है कि, यशपालजी ने केवल कलाके लिए अथवा मनोरंजन के लिए नाटक रचना नहीं की, वरन् एक उद्देश्य विशेष से प्रेरित होकरही इस क्षेत्र में प्रवेश किया है।

यात्रा - विवरण --

मनुष्य की सहजात प्रवृत्तियाँ मनोविज्ञान में चौदह मानी गयी हैं। उसमें वृधि का सवाल आनेपर ही हमें यात्रा को भी इसमें गिनना पड़ेगा। यात्रा से प्राप्त अनुभवों का कथन करने की प्रवृत्ति यात्रा का ही तरह सहज है। मनुष्य निरंतर अपनी अनुभूति का प्रकटीकरण चाहता है। ' यात्रा-विवरण ' इसी प्रकटीकरण की निवेच्छा का ही लिपिबध्द रूप है। यशपाल के यात्रा-विवरण का विश्लेषण इस प्रकार ---

१) लोहे की दीवार के दोनों ओर ।

२) राह बीती ।

३) स्वर्गोद्यान बिना साप ।

संस्मरण --

संस्मरण भी यशपाल ने लिखा है। अपनी बीति आयू उन्होंने इसमें उल्लेख किया है और अपने संस्मरण को ना भी बड़ा अर्थ सूचक दिया है ।

१) सिंहावलोकन भाग-१- ।

२) सिंहावलोकन भाग-२ ।

३) सिंहावलोकन भाग-३ ।

४) सिंहावलोकन भाग -४ । (अधुरा रह गया है ।)

निष्कर्ष --

अपनी युवा अवस्था में हाथ में पिस्तौल लेकर घुमता यह आतंकवादी और खतरनाक क्रान्तिकारी अपनी रिहाई के बाद पिस्तौल फेंककर हाथ में कलाम लेकर समाज के सामने आता है । सामाजिक क्रान्तिका साहित्य समाजपर बरसाता है । यशपाल के इस दोहरे रूप के कारण वे पूजनीय हैं ।

मार्क्सवाद का प्रचार, गांधीवाद का विरोध यशपाल के जीवन के प्रमुख अंग दिखाई देते हैं । अंतिम समयतक वे अपने सिध्दान्तों को चिपके रहे । जीवन में सभी मान, सम्मानों, उपाधियों, पुरस्कारों ने उनके चरण चूमकर उनकी महानता को माना है । व्यक्तित्व के विभिन्न पहलूओं में इस महानता की सृष्टि की । देशकाल एवं समाज को ध्यान में रखकर उनके प्रति अपने दायित्व का उन्होंने सफलता पूर्वक निर्वाह किया । यही उनके ' जीवन का सार ' समझा जाता है । इस महान साहित्यकारको सामाजिक प्रतिबध्दता देखकर उन्हें महान साहित्यकारों में स्थान मिला ।

संदर्भ सूचि

	लेखक	ग्रंथ	पृष्ठ
१	यशपाल	सिंहावलोकन भाग-१-	४३ ।
२	वही	वही	५८ ।
३	वही	वही	५८ ।
४	वही	सिंहावलोकन भाग-२	९१ ।
५	वही	वही-भाग-१	१४६ ।
६	वही	वही	१६० ।
७	वही	वही	१६० ।
८	शान्ति प्रिया द्विवेदी	समयिकी	२८२ ।
९	डॉ.सुनिलकुमार लवटे ।	यशपाल एक समग्र मूल्यांकन	२६२ ।